मुहब्बत

मुहब्बत

muhabbat

Love

by W. Miller
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

सबसे अहम चीज़

दुनिया में अहमतरीन चीज़ क्या है? क्या सबसे अहम चीज़ पैसों का हुसूल है? बेशक हम रुपए पैसे के बग़ैर ख़ुराक, लिबास और दीगर ज़रूरियात हासिल नहीं कर सकते। इससे हम बुलंद मरतबा और असर-रसूख़ भी हासिल कर सकते हैं।

या क्या सेहत अज़ीमतरीन शै है? सेहत के बग़ैर न तो हम कोई काम अंजाम दे सकते हैं और न ही ज़िंदगी से लुत्फ़अंदोज़ हो सकते हैं।

क्या इल्म और हिकमत सबसे अहम चीज़ है? कुछ अपनी पूरी ज़िंदगी को इल्म हासिल करने में सर्फ़ करते हैं।

या क्या हक़ तआला पर ईमान सबसे ज़्यादा अहम है? बाज़ कहते हैं कि इनसान और अक़वाम को जो शै ज़वाल और तबाही से बचा सकती है वह ख़ुदाए-वाहिदो-बरहक़ पर ईमान लाना है।

मुहब्बत अफ़ज़ल है

कलामे-इलाही का और ख़याल है। वह फ़रमाता है कि मुहब्बत अफ़ज़ल है।

मुहब्बत क्या है?

लेकिन मुहब्बत है क्या? और यह क्यों अफ़ज़ल है? लफ़्ज़ मुहब्बत मुख़तलिफ़ मानों में इस्तेमाल होता है।

जिंसी कशिश

जो कशिश मर्द और औरत एक दूसरे के लिए रखते हैं उसे हम मुहब्बत कहते हैं। निकाह की हालत में यह मुहब्बत बड़ी आला शै है।

दोस्ती

दोस्ती मुहब्बत की एक और क़िस्म है। इनसान तनहा नहीं रह सकता। दोस्ती से हमारी ज़िंदगी ज़्यादा बामानी और पुर-मुसर्रत हो जाती है। दोस्ती एक बड़ी क़ीमती चीज़ होती है।

पड़ोसी से मुहब्बत

लेकिन एक और क़िस्म की मुहब्बत भी है। हक़ तआला तौरेत शरीफ़ में फ़रमाता है,

> अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है। (तौरेत, अहबार 19:18)

कौन मेरा पड़ोसी है?

किसी ने हज़रत ईसा से पूछा कि कौन मेरा पड़ोसी है? हुज़ूर ने जवाब में फ़रमाया,

> एक आदमी यरूशलम से यरीहू की तरफ़ जा रहा था कि वह डाकुओं के हाथों में पड़ गया। उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे ख़ूब मारा और अधमुआ छोड़कर चले गए। इत्तफ़ाक़ से एक इमाम भी उसी रास्ते पर यरीहू की तरफ़ चल रहा था। लेकिन जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो रास्ते की परली तरफ़ होकर आगे निकल गया। लावी क़बीले का एक ख़ादिम भी वहाँ से गुज़रा। लेकिन वह भी रास्ते की परली तरफ़ से आगे निकल

> गया। फिर सामरिया[1] का एक मुसाफ़िर वहाँ से गुज़रा। जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो उसे उस पर तरस आया। वह उसके पास गया और उसके ज़ख़मों पर तेल और मै लगाकर उन पर पट्टियाँ बाँध दीं। फिर उसको अपने गधे पर बिठाकर सराय तक ले गया। वहाँ उसने उसकी मज़ीद देख-भाल की। अगले दिन उसने चाँदी के दो सिक्के निकालकर सराय के मालिक को दिए और कहा, 'इसकी देख-भाल करना। अगर ख़र्चा इससे बढ़कर हुआ तो मैं वापसी पर अदा कर दूँगा'।
> (इंजील जलील, लूक़ा 10:30-35)

इस कहानी में कौन पड़ोसी था? वह जिसने रहम किया। जिससे भी हम बाज़ारों, दफ़्तरों, स्कूलों, बसों और फ़ैक्टरियों में मिलते हैं वह हमारा पड़ोसी है। हमारा फ़रज़ यह है कि हम हर दूसरे से वैसी मुहब्बत रखें जैसी अपने आपसे रखते हैं। हम हर दूसरे के साथ वैसा ही सुलूक करें जैसा कि हम चाहते हैं कि लोग हमारे साथ करें। तब मैं न सिर्फ़ उससे बदी करने से बाज़ रहूँगा बल्कि उससे बराबर नेकी भी करूँगा, चाहे वह इस लायक़ हो या न हो।

[1] अहले-यहूद और सामरियों के दरमियान दुश्मनी थी।

दुश्मन से भी मुहब्बत

आम इनसान अपने दोस्तों से मुहब्बत और दुश्मनों से अदावत रखता है। लेकिन हज़रत ईसा ने फ़रमाया,

> मैं तुमको बताता हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और उनके लिए दुआ करो जो तुमको सताते हैं। (इंजील जलील, मत्ती 5:44)

हुज़ूर इस फ़रमान पर पूरी तरह अमल करते थे। मरते वक़्त आपने उन सिपाहियों के लिए माफ़ी माँगी जो आपके जिस्म में कील ठोंक रहे थे। आपने फ़रमाया,

> ऐ बाप, इन्हें माफ़ कर, क्योंकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं। (इंजील शरीफ़, लूक़ा 23:34)

इस तरह अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखना इनसान के लिए नामुमकिन लगता है। लेकिन इब्तिदाई ज़माने के बहुत-से पैरोकार इस नमूने पर चलते थे। इंजील जलील में एक पैरोकार का ज़िक्र है जिसने अपने क़ातिलों को बददुआ देने की बजाए कहा,

> ऐ ख़ुदावंद, उन्हें इस गुनाह के ज़िम्मेदार न ठहरा। (आमाल बाब 7:60)

इंजील शरीफ़ इस मुहब्बत की तारीफ़ यों बयान करती है,

> मुहब्बत सब्र से काम लेती है, मुहब्बत मेहरबान है। न यह हसद करती है न डींगें मारती है। यह फूलती भी नहीं। मुहब्बत बदतमीज़ी नहीं करती न अपने ही फ़ायदे की तलाश में रहती है। यह जल्दी से ग़ुस्से में नहीं आ जाती और दूसरों की ग़लतियों का रिकार्ड नहीं रखती। यह ना-इनसाफ़ी देखकर ख़ुश नहीं होती बल्कि सच्चाई के ग़ालिब आने पर ही ख़ुशी मनाती है। यह हमेशा दूसरों की कमज़ोरियाँ बरदाश्त करती है, हमेशा एतमाद करती है, हमेशा उम्मीद रखती है, हमेशा साबितक़दम रहती है। मुहब्बत कभी ख़त्म नहीं होती।
> (1 कुरिंथियों 13:4-8)

अल्लाह से मुहब्बत

मुहब्बत की सबसे आला क़िस्म क्या है? हक़ तआला से मुहब्बत। जब हज़रत ईसा से पूछा गया कि सबसे अहम हुक्म क्या है तो आपने तौरेत शरीफ़ का हवाला देकर फ़रमाया,

> रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना। यह अव्वल और सबसे बड़ा हुक्म है। (मत्ती 22:37)

अल्लाह से मुहब्बत क्यों सबसे अहम है?

हक़ तआला से मुहब्बत क्यों सबसे अहम है? इसलिए कि वह हमारा ख़ालिक़ है। उसने हमें पैदा किया और शऊर बख़्शा कि उसे जान सकें। वह हमारा परवरदिगार भी है। वह नेको-बद पर अपना सूरज चमकाता और बारिश बरसाता है। वह हमें ख़ुराक, लिबास और दीगर ज़रूरियात से नवाज़ता है।

इस परवरदिगारी के पेशे-नज़र हम इतना तो कह सकते हैं कि वह रहीम है। लेकिन क्या काइनात के निज़ाम को क़ायम रखनेवाला ख़ालिक़ो-मालिक ख़ाकी इनसान से मज़ीद प्यार भी करता है? ज़रूर। उसने बार बार अपनी उम्मत से मुहब्बत का इज़हार किया है। मसलन

> मैंने तुझे हमेशा ही प्यार किया है। (यरमियाह 31:3)

लेकिन वह न सिर्फ़ अपनी उम्मत से बल्कि तमाम इनसानों से मुहब्बत रखता है।

अल्लाह की मुहब्बत

हक़ तआला की तमाम इनसानों से मुहब्बत किस तरह ज़ाहिर होती है? काइनात की बख़्शिशों का ज़िक्र हो चुका है। लेकिन इसके अलावा इंजील शरीफ़ में लिखा है,

> अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इक्लौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। (इंजील जलील, यूहन्ना 3:16)

यह कितनी अजीब ख़ुशख़बरी है!

नेको-बद से मुहब्बत

हक़ तआला पूरी दुनिया से मुहब्बत रखता है। वह न सिर्फ़ नेक बल्कि बद को भी प्यार करता है। यह कितनी अजीब बात है कि आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ो-मालिक आपको, मुझे और तमाम इनसानी नसल को प्यार करता है।

हज़रत ईसा की क़ुरबानी

बारी तआला ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने इस गुनाहगार नसल को हलाकत से बचाने के लिए अपना फ़रज़ंद दे दिया। हुज़ूर की सलीब पर मौत इनसान के लिए हक़ तआला की बेहद मुहब्बत का कामिल इज़हार और सबूत है।

गुनाहगारों की ख़ातिर क़ुरबानी

अगर हक़ तआला अपने प्यारे बेटे को सिर्फ़ नेकूकारों ही के लिए क़ुरबान करता तो यह उसकी मुहब्बत का एक अजीबो-नादिर इज़हार होता। लेकिन हज़रत ईसा ने न सिर्फ़ दोस्तों बल्कि दुश्मनों के लिए भी अपनी जान दी। इंजील शरीफ़ में इर्शाद है कि

> अल्लाह ने हमसे अपनी मुहब्बत का इज़हार यों किया कि मसीह ने उस वक़्त हमारी ख़ातिर अपनी जान दी जब हम गुनाहगार ही थे। ...हम अभी अल्लाह के दुश्मन ही थे जब उसके फ़रज़ंद की मौत के वसीले से हमारी उसके साथ सुलह हो गई। (रोमियों 5:8,10)

मक़सद : गुनाह की माफ़ी

अब हक़ तआला की ख़्वाहिश यही है कि दुनिया के तमाम लोग हुज़ूर अल-मसीह पर ईमान लाकर यह अज़ीम बख़्शिश को क़बूल करें ताकि उनके गुनाह माफ़ हों और वह उनके रूहानी फ़रज़ंद बन जाएँ। यह दावत हर ख़ासो-आम के लिए है। इस में आप भी शामिल हैं। अगर आप हज़रत ईसा को सच्चे दिल से क़बूल करेंगे तो आप फ़ौरन अबदी ज़िंदगी के वारिस बन जाएँगे।

इंजील जलील फ़रमाती है,

> अज़ीज़ो, आएँ हम एक दूसरे से मुहब्बत रखें। क्योंकि मुहब्बत अल्लाह की तरफ़ से है, और जो मुहब्बत रखता है वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है और अल्लाह को जानता है। ...यही मुहब्बत है, यह नहीं कि हमने अल्लाह से मुहब्बत की बल्कि यह कि उसने हमसे मुहब्बत करके अपने फ़रज़ंद को भेज दिया ताकि वह हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए कफ़्फ़ारा दे।
> (1 यूहन्ना 4:7,10)

अल्लाह की अज़ीमतरीन सिफ़त मुहब्बत है

हक़ तआला मुहब्बत है। ज़ाते-इलाही की अज़ीमतरीन सिफ़त न क़ुदरत है, न इल्म या अदल बल्कि मुहब्बत। यही वजह है कि हक़ तआला का सबसे बड़ा हुक्म यह है कि हम उससे अपने सारे दिल, अपनी सारी जान और अपनी सारी अक़्ल से मुहब्बत रखें।

हक़ तआला ने पहले ही हमसे मुहब्बत की। इसलिए मुनासिब है कि हम भी उससे मुहब्बत रखकर पूरी ताक़त से उसकी ख़िदमत करें। तब हम उसके ख़ानदान में शामिल हो जाते हैं। यों इंजील जलील फ़रमाती है,

> हम तो जानते हैं कि हम मौत से निकलकर ज़िंदगी में दाख़िल हो गए हैं। हम यह इसलिए जानते हैं कि हम अपने भाइयों से मुहब्बत रखते हैं।
> (इंजील जलील, 1 यूहन्ना 3:14)

नया हुक्म : हुज़ूर की-सा मुहब्बत रखो

एक रात हुज़ूर ने अपने शागिर्दों को मुहब्बत और फ़रोतनी का ऐसा सबक़ सिखाया जिसे वह कभी न भूल सके। उस ज़माने में दस्तूर यह था कि नौकर पानी और तौलिया लाकर खाने से पहले तमाम

मेहमानों के पाँव धोएँ। उस रात हुज़ूर ख़ुद उठे और पानी और तौलिया लेकर शागिर्दों के पाँव धोए। फिर आपने फ़रमाया,

> मैंने तुमको एक नमूना दिया है ताकि तुम भी वही करो जो मैंने तुम्हारे साथ किया है।
> (इंजील जलील, यूहन्ना 13:15)

यानी वह भी आपके नमूने पर चलते हुए एक दूसरे की हलीमी से ख़िदमत करें। फिर आपने फ़रमाया,

> मैं तुमको एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह मैंने तुमसे मुहब्बत रखी उसी तरह तुम भी एक दूसरे से मुहब्बत करो।
> (इंजील जलील, यूहन्ना 13:34)

हुज़ूर ने इसे नया हुक्म क्यों कहा? मूसवी शरीअत में पुराना हुक्म यों था,

> अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है। (तौरेत, अहबार 19:18)

इसके मुक़ाबले में हुज़ूर ने फ़रमाया कि शागिर्द वैसी मुहब्बत रखें जैसी आपने उनसे रखी। अब हुज़ूर की कामिल मुहब्बत दूसरों के साथ हमारी मुहब्बत का मेयार है। जिस तरह आपने हमारे लिए

अपनी जान दी उसी तरह हम भी एक दूसरे से मुहब्बत रखें। यह मुहब्बत इम्तियाज़ी निशान बन गई, क्योंकि आपने फ़रमाया,

> अगर तुम एक दूसरे से मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शागिर्द हो।
> (इंजील जलील, यूहन्ना 13:35)

ऐसी मुहब्बत कैसे मुमकिन?

लेकिन हम जैसे गुनाहगारों के लिए हक़ तआला और अपने हमजिंस इनसानों से इस क़िस्म की मुहब्बत रखना कैसे मुमकिन हो सकता है? हम अपने ख़ानदान, दोस्तों यहाँ तक कि अपने दुश्मनों के साथ हमेशा हलीमी, बुर्दबारी और मेहरबानी से पेश आने के क़ाबिल कैसे बन सकते हैं? जिस तरह हुज़ूर अल-मसीह ने हमसे मुहब्बत की, क्या हम भी वैसी ही मुहब्बत दूसरों से रख सकते हैं? ज़ाहिर है कि यह हक़ तआला की मदद के बग़ैर नामुमकिन है।

हज़रत ईसा के पैरोकारों में आपकी-सा मुहब्बत कार फ़रमा थी। लेकिन यह उनकी ख़ुद पैदाकरदा नहीं थी, बल्कि अल्लाह की तरफ़ से थी। क्योंकि जब वह आप पर ईमान लाए तो ख़ुदा के पाक रूह ने यह मुहब्बत उनके दिलों में डाली थी। जब कोई हुज़ूर अल-मसीह पर ईमान लाता है तो वह अल्लाह के घराने का

फ़रद बन जाता है। चूँकि हक़ तआला मुहब्बत है, इसलिए उसके इन रूहानी फ़रज़ंदों को भी यह मुहब्बत मिल जाती है। और वह उसके इक्लौते फ़रज़ंद मसीह की तरह इस इलाही मुहब्बत की राह पर चलने लगते हैं।

इस दुनिया में अज़ीमतरीन शै मुहब्बत है। दुनिया को इसकी कितनी ज़रूरत है! अज़ीज़ क़ारी, क्या आप इस बेबहा ख़ज़ाने के ख़्वाहिशमंद हैं? हक़ तआला जो मुहब्बत का सरचश्मा है आपको इसे देने के लिए तैयार है। शर्त यह है कि आप उसकी मुहब्बत की बख़्शिश हुज़ूर अल-मसीह को क़बूल कर लें। तब वह आपके दिल को इलाही मुहब्बत से मामूर कर देगा। तब आप उसके हुक्म के मुताबिक़ ख़ुदा और इनसान दोनों से मुहब्बत रखने के क़ाबिल बन जाएँगे।